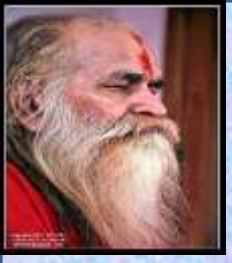

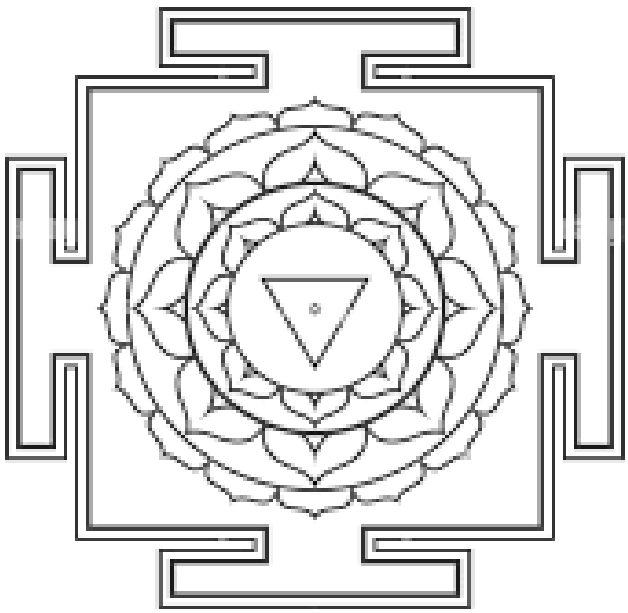

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

श्री मातङ्गी : नवम महाविद्या

आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो विश्रुतकीर्त्तिमापुः ।
अन्ये परं वा विभवं मनीन्द्राः परां श्रियं भक्तिभरेणचान्ये ।।
नमामि देवीं नवचन्द्रमौलिं मातङ्गिनीं चन्द्रकलावतंसाम् ।
आम्नायकृत्यप्रतिपादितार्थं प्रबोधयन्तीं हृदि सादरेण ।।

मतङ्ग शिव का नाम है, इनकी शक्ति मातङ्गी के ध्यान में बताया गया है कि ये श्यामवर्णा हैं और चन्द्रमा को मस्तक पर धारण किये हुए हैं । भगवती मातङ्गी त्रिनेत्रा, रत्नमय सिंहासन पर आसीन, नीलकमल के समान कान्ति वाली तथा राक्षस-समूह रूप अरण्य को भस्म करने में दावानल के समान हैं । इन्होंने अपनी चार भुजाओं में पाश, अङ्कुश, खेटक और खड्ग धारण किया है । ये असुरों को मोहित करने वाली एवं भक्तों को अभीष्ट फल देने वाली हैं । गृहस्थ-जीवन को सुखी बनाने, पुरुषार्थ-सिद्धि और वाग्विलास में पारंगत होने के लिए मातङ्गी की साधना श्रेयस्कर है । महाविद्याओं में ये नवें स्थान पर परिगणित हैं ।

नारदपाञ्चरात्र के बारहवें अध्याय में शिव को चाण्डाल तथा शिवा को उच्छिष्ट चाण्डाली कहा गया है । इनका ही नाम मातङ्गी है । पुराकाल में मतङ्ग नामक मुनि ने नाना वृक्षों से परिपूर्ण कदम्ब-वन में सभी जीवों को वश में करने के लिये भगवती त्रिपुरा की प्रसन्नता हेतु कठोर तपस्या की थी, उस समय त्रिपुरा के नेत्र से उत्पन्न तेज ने एक श्यामल नारी-विग्रहका रूप धारण कर लिया । इन्हें राजमातङ्गिनी कहा गया । यह दक्षिण तथा पश्चिमाम्नायकी देवी हैं । राजमातङ्गी, सुमुखी, वश्यमातङ्गी तथा कर्णमातङ्गी इनके नामान्तर हैं । मातङ्गी के भैरव का नाम मतङ्ग है । ब्रह्मयामल इन्हें मतङ्ग मुनि की कन्या बताता है ।

दशमहाविद्याओं में मातङ्गी की उपासना विशेष रूप से वाक्सिद्धि के लिए की जाती है । पुरश्चर्यार्णव में कहा गया है-

अक्षवक्ष्ये महादेवीं मातङ्गीं सर्वसिद्धिदाम् ।
अस्याः सेवनमात्रेण वाक्सिद्धिं लभते ध्रुवम् ।।

मातङ्गी के स्थूलरूपात्मक प्रतीक विधान को देखने से यह भली भाँति ज्ञात हो जाता है कि ये पूर्णतया वाग्देवताकी ही मूर्ति हैं । मातङ्गी का श्यामवर्ण परावाक् बिन्दु है । उनका त्रिनयन सूर्य, सोम और अग्नि है । उनकी चार भुजाएँ चार वेद हैं । पाश अविद्या है, अङ्कुश विद्या है, कर्मराशि दण्ड है । शब्द-स्पर्शादि गुण कृपाण है अर्थात् पञ्चभूतात्मक सृष्टि के प्रतीक हैं । कदम्बवन ब्रह्माण्ड का प्रतीक है ।

योगराजोपरिषद् में ब्रह्मलोक को कदम्बगोलाकार कहा गया है-'कदम्बगोलाकारं ब्रह्मलोकं व्रजन्ति ते' । भगवती मातङ्गी का सिंहासन शिवात्मक महामञ्च या त्रिकोण है । उनकी मूर्ति सूक्ष्म रूप में यन्त्र तथा पर रूप में भावना मात्र है ।

दुर्गासप्तशती के सातवे अध्याय में भगवती मातङ्गी के ध्यान का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वे रत्नमय सिंहासन पर बैठकर पढ़ते हुए तोते का मधुर शब्द सुन रही हैं । उनके शरीर का वर्ण श्याम है । वे अपना एक पैर कमल पर रखी हुई हैं । अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र तथा गले में कल्हार पुष्पों की माला धारण करती हैं । वीणा बजाती हुई भगवती मातङ्गी के अङ्ग में कसी हुई चोली शोभा पा रही है । वे लाल रंग की साड़ी पहने तथा हाथ में शंखमय पात्र लिये हुए हैं । उनके वदन पर मधु का हल्का-हल्का प्रभाव जान पड़ता है और ललाट में बिन्दी शोभा पा रही है । इनका वल्लकी धारण करना नाद का प्रतीक है । तोते का पढ़ना 'ह्रीं' वर्ण का उच्चारण करना है, जो बीजाक्षरका प्रतीक है । कमल वर्णात्मक सृष्टि का प्रतीक है । शंखपात्र ब्रह्मरन्ध्र तथा मधु अमृत का प्रतीत है । रक्तवस्त्र अग्नि या ज्ञान का प्रतीक है । वाग्देवी के अर्थ में मातङ्गी यदि व्याकरण रूपा हैं तो शुक शिक्षा का प्रतीक है । चार भुजाएँ वेदचतुष्टय हैं । इस प्रकार तान्त्रिकों की भगवती मातङ्गी महाविद्या वैदिकों की सरस्वती ही हैं । तन्त्र ग्रन्थों में इनकी उपासना का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है ।(गीता प्रेस से साभार...)

षट्कोण अंकित करके उसके बाहर अष्टदल पद्म अंकित करके और फिर इस षट्कोण में देवी का मूल-मन्त्र लिखने से मातङ्गी माता का यन्त्र बनता है । इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध द्वारा लिखना चाहिए । देवी के मन्त्र का छः हजार जप से पुरश्चरण होता है और जप का दशांश से हवन किया जाता है । समिधा हेतु घृत, शर्करा और मधुमिश्रित ब्रह्मवृक्ष उपयोग में लाया जाता है । भगवती मातङ्गी की साधना विशेष रूप से यदि किसी कन्या के विवाह में विघ्न उपस्थित हो रहा हो अथवा वांछित स्थान पर सम्बन्ध न हो पा रहा हो, तब की जाती है । गृहस्थ सुख, पुत्र लाभ एवं अन्य प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए भी इनकी साधना प्रभावकारी है । इस नवम महाविद्या की संज्ञा मोह रात्रि के नाम से भी जानी जाती है । साधना काल में विविध प्रयोगों के लिए बेल का फूल, पलास के पत्ते एवं फूल, गिलोय, नीम, चावल, नमक, मधुरस, गन्धाष्टक, हल्दी इत्यादि का प्रयोग विहित है । इनके मन्त्र सिद्धि से साधक-शास्त्र, वाद-विवाद तथा कवित्व में पारंगत हो जाता है । यहाँ हमने मातङ्गी एवं राजमातङ्गी की सपर्या एवं आवरण पूजा-विधान को दिया है ।

***

श्यामाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां वेदैः करैः बिभ्रतीं ,
पाशं खेटाङ्कुशं दृढ असिं नाशाय भक्त द्विषां ।
रत्नालङ्कारण प्रभोज्ज्वल तनुं भास्वत्किरीटां शुभां ,
मातङ्गी मनसा स्मरामि सदया सर्वार्थ सिद्धिप्रदां ।।